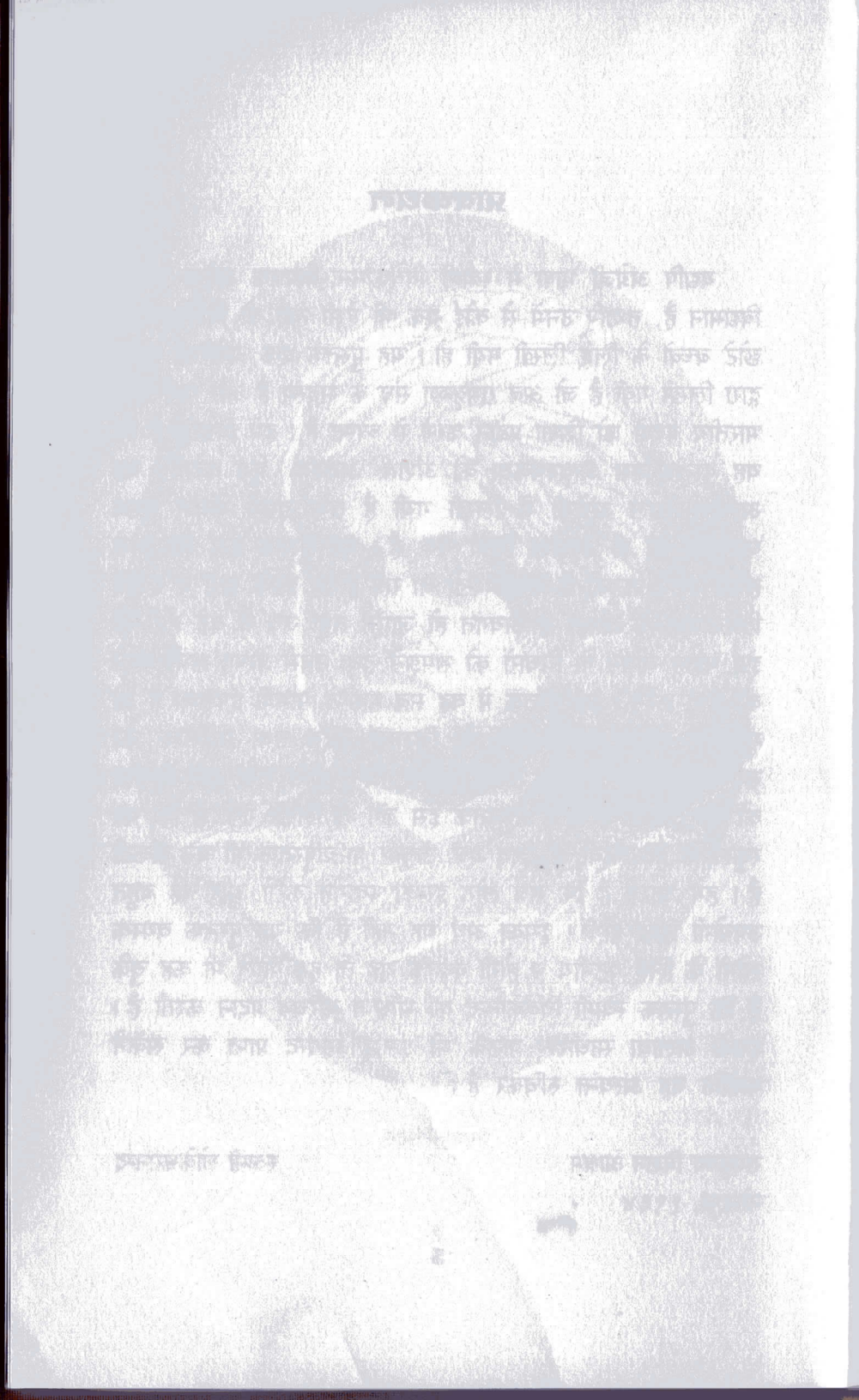

१

तरुण नरेन

एक बार एक युवक कोलकाता के रास्ते से गुज़र रहा था। अचानक, उसे जोर की चीख सुनाई दी। क्या हुआ? उसने देखा कि एक घोड़ा-गाड़ी रास्ते पर से बड़ी तेजी से भागी जा रही है। घोड़ा जितनी तेजी से हो सके उतने वेग से भागा जा रहा था। किसी चीज़ से घबड़ाकर घोड़ा इतनी तेजी से भाग रहा था। एक महिला जो इस गाड़ी पर सवार थी, वह भी बुरी तरह घबड़ाई हुई थी। वह बहुत संकट में थी क्योंकि किसी भी क्षण वह घोड़ा-गाड़ी पलट सकती थी। कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आ पा रहा था। उस युवक ने वस्तुस्थिति समझ ली। वह बड़ा साहसी था। जब घोड़ा उसके नज़दीक से गुज़रा, वह अपने जीवन को दाँव पर लगाकर उसकी तरफ ही लपका, और घोड़े की लगाम को पकड़कर उसे रुक जाने को बाध्य कर दिया। उस महिला के जीवन की रक्षा हो गयी तथा उसने उस नवयुवक पर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

वह नवयुवक कौन था? उस समय उसका नाम नरेन्द्रनाथ था, पर वही बाद में स्वामी विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसका जन्म कोलकाता के सिमला क्षेत्र के प्रसिद्ध दत्त परिवार में हुआ था। उसके पिता श्री विश्वनाथ दत्त वकील थे। उन्होंने कई विषयों का अध्ययन किया था एवं सभी उनका समुचित सम्मान करते थे। उनकी पत्नी श्रीमती भुवनेश्वरीदेवी थीं। वे दीखने एवं व्यवहार में एक रानी के समान गरिमामयी थीं। सभी उन्हें स्नेह एवं आदर करते थे।

१२ जनवरी १८६३ को उन्होंने प्रथम पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया - नरेन्द्रनाथ।

यदि उसके सिर पर ठण्डा पानी डालते हुए उसके कान में शिव का नाम सुनाया जाए, तो वह एकदम शान्त हो जाया करता।

नरेन बड़ा नटखट बालक था, और कभी-कभी भुवनेश्वरीदेवी उसे सम्भालने में असमर्थ हो जातीं। परन्तु उन्होंने यह देखा कि जब नरेन अत्यधिक चंचल हो जाता, तो यदि उसके सिर पर ठण्डा पानी डालते हुए उसके कान में शिव का नाम सुनाया जाए, तो वह एकदम शान्त हो जाया करता। इसलिए, अनेकों बार उसे नियन्त्रण में लाने के लिए वे इस युक्ति का इस्तेमाल किया करती थीं।

एकबार एक नाग सरकते हुए वहाँ आ पहुँचा। अन्य बालक भाग खड़े हुए, परन्तु नरेन वहीं बैठा रहा।

बालक नरेन ने अपनी माता से बहुत-सी बातें सीखी थीं, और उनकी माता उसे महाभारत तथा रामायण से अनेकों कहानियाँ सुनाया करती थीं। नरेन को राम-विषयक कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता था। उसने राम-सीता की मिट्टी की एक युगल-मूर्ति खरीदी और फूलों से उसकी पूजा करनी शुरू कर दी। एक बार वह केले के उद्यान में इस उम्मीद में बहुत समय तक बैठा रहा कि उसे हनुमानजी

के दर्शन प्राप्त होंगे क्योंकि उसने कहीं सुन रखा था कि राम के इस वीर भक्त को ऐसा स्थान अत्यन्त प्रिय है।

उसे ध्यान में मग्न होनेवाला खेल भी प्रिय था। वह अपने दो-एक संगियों को अपने साथ किसी एकान्त स्थान में ले जाता और वे लोग सीता-राम या शिव की मूर्ति के सामने बैठ जाते। तब नरेन ध्यान करने बैठ जाता और भगवान का चिन्तन करता। वह ईश्वर के ध्यान में मग्न हो जाता और उस समय अपने आसपास कुछ भी अनुभव नहीं कर पाता। एकबार एक नाग सरकते हुए वहाँ आ पहुँचा। अन्य बालक भाग खड़े हुए, परन्तु नरेन वहीं बैठा रहा। उन्होंने बहुत बार उसे पुकारा, परन्तु नरेन ने कुछ न सुना। कुछ देर बाद नाग वहाँ से चला गया। बाद में जब उसके माता-पिता ने नरेन से पूछा कि वह वहाँ से भागा क्यों नहीं, तो उसने कहा, "मैं नाग के बारे में कुछ भी जान न पाया। मैं तो आनन्द में था।"

जब कोई साधु नरेन के घर आते तो वह बड़ा प्रसन्न होता था। कभी-कभी तो वह उन्हें कीमती चीज़ें तक दे डालता था। एक बार उसने अपना पहना हुआ नया कपड़ा ही एक साधु को दे दिया। इस घटना के बाद जब भी कोई साधु उनके घर में आता, तो नरेन को एक कमरे में बन्द कर दिया जाता था। परन्तु यदि नरेन उस समय किसी साधु को देख पाता तो खिड़की से ही चीज़ें फेंक दिया करता। कभी-कभी तो वह कह उठता कि किसी दिन वह भी साधु बन जाएगा।

जैसा हमने पहले ही कहा है, नरेन के पिताजी एक वकील थे। बहुत-से लोग उनसे मिलने आया करते थे। वे उन सबका आतिथ्य करते एवं हुक्का पीने के लिए दिया करते। बैठकखाने में विभिन्न जाति के लोगों के लिए अलग-अलग हुक्कों की व्यवस्था थी। परन्तु जातिभेद नरेन के लिए एक बड़ा रहस्य था। क्यों एक जाति के सदस्य को अन्य जाति के सदस्यों के साथ भोजन करने नहीं दिया जाता? क्यों विभिन्न जातियों के लिए अलग-अलग हुक्कों की व्यवस्था की गयी थी? मुसलमानों के लिए एक अलग हुक्के की व्यवस्था थी। क्या होगा यदि वह सभी हुक्कों से धूम्रपान करे? क्या कोई धमाका होगा? या छत नीचे गिर पड़ेगी? नरेन

ने स्वयं ही इसका पता लगाने का निश्चय किया। उसने एक हुक्के से एक कश लगाया। कुछ भी तो नहीं हुआ। इस प्रकार एक के बाद एक सभी हुक्कों से कश लगाया। फिर भी कुछ नहीं हुआ। उसी वक़्त उसके पिताजी ने उस कक्ष में प्रवेश किया और पूछा कि वह क्या कर रहा है। नरेन ने उत्तर दिया, "पिताजी ! मैं देख रहा था कि यदि मैंने इस तरह जाति तोड़ी, तो आख़िर होगा क्या?" उसके पिताजी ने एक ठहाका लगाया और अपने अध्ययन कक्ष में चले गये।

२

नरेन पाठशाला और खेल में

जब नरेन छह वर्ष का हुआ तो उसका पढ़ना शुरू हुआ। पहले-पहल वह पाठशाला में नहीं गया था क्योंकि उसके पिताजी ने उसके लिए एक शिक्षक नियुक्त कर दिया था। वह शीघ्र ही पढ़ना और लिखना सीख गया। उसकी स्मरणशक्ति असाधारण थी और शिक्षक से केवल एक बार सुन लेने मात्र से ही उसे वह पाठ याद हो जाया करता था।

जब वह सात वर्ष का हुआ तो उसे मेट्रोपोलिटन संस्था में दाखिल करवाया गया। इस संस्था के संस्थापक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर थे। नरेन्द्रनाथ एक अत्यन्त मेधावी छात्र था और अकस्मात् ही पाठ को याद कर लिया करता था। वह बालकों का नेता बन गया। खेल में उसकी बहुत रुचि थी। दोपहर भोजन समाप्त कर वह सबसे पहले खेल के मैदान में पहुँच जाता। कूदना, दौड़ना, मुक्केबाजी तथा काँच की गोलियों से खेलना आदि में उसकी विशेष रुचि थी। वह कुछ खेलों का आविष्कार भी कर लिया करता था।

कभी-कभी तो अपनी कक्षा को ही वह खेल का मैदान बना डालता था। शिक्षक की उपस्थिति में ही वह अन्य साथियों से बातचीत करता और उन्हें कहानियाँ भी सुनाया करता था। एक शिक्षक ने उन लोगों को बातचीत करते पकड़ लिया। उन्होंने नरेन तथा उसके

साथियों से पाठ सम्बन्धी कुछ प्रश्न पूछे। परन्तु नरेन के अलावा उसका कोई भी साथी उत्तर न दे सका। नरेन शिक्षक को भी सुन रहा था और इधर बातचीत भी कर रहा था। उसने शिक्षक द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नों के सटीक उत्तर दे दिये। तब शिक्षक ने उनसे पूछा कि बातचीत कौन कर रहा था। सभी लड़कों ने नरेन की ओर इशारा किया। शिक्षक ने इसपर विश्वास नहीं किया और उन लोगों को खड़े हो जाने की सजा दी। नरेन भी खड़ा हो गया। शिक्षक ने कहा कि उसे खड़े होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु नरेन फिर भी खड़ा ही रहा। उसने कहा, "मुझे खड़ा होना ही चाहिए, क्योंकि मैं ही तो बातें कर रहा था।"

नरेन का एक प्रिय खेल था "राजा और राज-दरबार" जिसमें नरेन हमेशा राजा ही बनता था। राजदरबार बरामदे और पूजाघर की सीढ़ियों पर लगता था। सबसे ऊपरवाली सीढ़ी पर नरेन का राजसिंहासन होता था। वहीं पर बैठकर वह अपने राजमन्त्रियों की नियुक्ति करता था। एक लड़के को प्रधानमन्त्री तथा अन्य एक को सेनापति बनाया जाता था। कुछ को छोटे-छोटे राजाओं का पद दिया जाता तथा अन्यों को सरकारी अधिकारियों का। तब वे अपने-अपने पदों के अनुसार नीचे की सीढ़ियों पर आसीन हो जाते। इस प्रकार राजा नरेन अपने राजदरबार का संचालन करता। राजा आदेश दिया करता, झगड़े निपटाया करता, या विरोधियों का दमन भी करता। किसी को भी राजाज्ञा का उल्लंघन करने की छूट नहीं थी। कभी-कभी वह आरोपी को कठोर दण्ड का हुक्म भी दिया करता। अपराधी भागने की भी चेष्टा करता परन्तु राजा के आदमी पूरे घर में उसका पीछा करके शोर-शराबे के साथ उसे पकड़ ही लिया करते।

नरेन को पशुओं से भी बड़ी प्रीति थी तथा वह घर की गाय से भी खेला करता। उसने कुछ पालतू जानवर और पक्षियों को भी पाल रखा था। इनमें एक-एक बन्दर, बकरी और मोर, कुछ कबूतर तथा दो या तीन गिनी-पिग थे।

कोचवान नरेन का विशेष मित्र था, और नरेन को अक्सर उससे बड़ी आत्मीयता से बातचीत करते पाया जाता। नरेन सोचता कि

परन्तु नरेन तथा उसके दो-एक मित्रों ने वहाँ रहकर उस नाविक की सहायता की।

कोचवान एक विशिष्ट व्यक्ति होता है। वह गाड़ी के सामने कैसे ठाठ से माथे पर पगड़ी पहने और हाथ में चाबुक लिये बैठता है। नरेन कहता था कि जब वह बड़ा होगा तो साईस बनेगा।

वह अनेक खेलों को आज़माता। कभी-कभी वह रसोईघरवाला खेल भी खेलता। वह सब्जियाँ ले आता तथा मसालों के साथ विभिन्न तरकारियाँ बनाता। वह सचमुच एक अच्छा रसोइया था। अन्य समय में वह कुछ बालकों को इकट्ठा करके नाटक भी किया करता। फिर

उसकी व्यायाम में रुचि हुई। पहले तो उसने अपने बरामदे में ही एक व्यायामशाला निर्मित कर ली, फिर बाद में पड़ोस की व्यायामशाला में जाया करता। उसने तलवार चलाना, लाठी-चालन, कुश्ती तथा अन्यान्य क्रीड़ाएँ भी सीखीं।

एक बार नरेन और उसके साथी एक भारी-भरकम कलाबाज़ीवाले झूले को लगाने की चेष्टा कर रहे थे। बच्चों के लिए वह एक बड़ा कठिन काम था। यद्यपि बहुत-से लोग इसे देखने के लिए वहाँ जमा हुए थे, फिर भी मदद के लिए कोई भी नहीं आ रहा था। नरेन ने उन लोगों में एक शक्तिशाली ब्रिटिश नाविक को देखा। वह उसके पास गया एवं मदद की याचना की। नाविक ने स्वीकार किया। वह उन लोगों की सहायता करने लगा, परन्तु अचानक वह झूला छूट गया एवं नाविक से टकराया। वह बेहोश होकर गिर पड़ा। बहुत-से लोगों ने सोचा कि नाविक मर गया है और उस जगह से नौ दो ग्यारह हो गये। परन्तु नरेन तथा उसके दो-एक मित्रों ने वहाँ रहकर उस नाविक की सहायता की। नरेन ने अपनी धोती फाड़कर उससे पट्टी बना ली। फिर उसके घावों पर उस पट्टी को बाँधकर उसके मुख पर पानी के छींटे दिये तथा धीरे-धीरे उसे हवा करने लगा। कुछ देर बाद नाविक को होश आ गया। नरेन तब उसे पास के एक स्कूल में ले गया जहाँ वह रह सके। फिर उसने एक डॉक्टर को बुला भेजा। एक सप्ताह बाद वह नाविक स्वस्थ हुआ और चला गया। उसके जाने के पहले नरेन ने अपने मित्रों से कुछ रुपये जमा किये एवं उस नाविक को दे दिये।

३

नरेन और उसके मित्र

नरेन और उसके मित्र कोलकाता के विभिन्न दर्शनीय स्थलों को देखने जाया करते। एक दिन नरेन और कुछ लड़के कोलकाता के

समीप, मेटियाबुरुज़ में नवाब का प्राणिसंग्रहालय देखने गये। वे लोग नाव पर गये थे। वापस आते समय उनमें से एक ने नाव पर ही कै (उल्टी) कर दी। नाविक बहुत गुस्सा हो गये। उन्होंने उन बालकों से उसे साफ करने के लिए कहा। परन्तु उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया और दुगुना भाड़ा ले लेने के लिए कहा। परन्तु नाविकों ने इसे न माना। नाव जब किनारे लगी तो नाविकों ने उन्हें बाहर आने न दिया। नाविक बालकों को डराने और गालियाँ बकने लगे। नरेन धीरे-से कूदकर किनारे पर आ गया। उसने दो अंग्रेज सिपाहियों को वहाँ टहलते देखा और उनसे सहायता करने के लिए कहा। वे लोग उसके साथ वहाँ पर आए और मामला समझ गये। उन्होंने नाविकों को डाँटा और बच्चों को छोड़ देने का आदेश दिया। नाविकों ने घबड़ाकर बच्चों को तत्काल छोड़ दिया।

नरेन जब लगभग ११ वर्ष का था, एक बार 'ब्रिटिश-मैन-ऑफ-वार' (एक युद्धपोत) कोलकाता के एक बन्दरगाह पर आया था। बहुत-से लोग उस जहाज को देखने के लिए गये थे तथा नरेन और उसके मित्र भी उसे देखना चाहते थे। इस हेतु एक विशिष्ट ब्रिटिश अधिकारी द्वारा एक पास लेना आवश्यक होता था। नरेन ने फॉर्म भरा एवं उस भवन की ओर गया जहाँ वह अधिकारी बैठता था। बहुत-से लोग भीतर जा रहे थे, परन्तु दरबान ने नरेन को बहुत ही छोटा समझकर उसे भीतर जाने से रोक दिया। नरेन बाहर खड़ा सोचने लगा कि अब क्या किया जाए ! उसने देखा सभी लोग पहली मँजिल के एक कमरे में जा रहे हैं। उसने सोचा कि वहाँ जाने का कोई दूसरा मार्ग अवश्य ही होगा। इसलिए वह भवन के पिछले हिस्से में गया जहाँ उसे सीढ़ियाँ दिखाई दीं। वहाँ पर कोई दरबान न था, इसलिए वह सीधे पहली मँजिल पर पहुँच गया। एक परदे को सरकाने पर उसे कुछ लोग इन्तज़ार करते दिखे। वह उस कतार में सम्मिलित हो गया और ब्रिटिश अधिकारी ने बिना प्रश्न किये अपने हस्ताक्षर कर दिये। नरेन उसी मुख्य प्रवेश द्वार से बाहर आ

देखो, तुम जानते नहीं कि उस पेड़ पर एक भूत रहता है? वह ब्रह्म-दैत्य है। यदि तुम लोग उसको इस तरह परेशान करोगे, तो वह तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा। सावधान ! उस पेड़ पर फिर कभी मत चढ़ना।

गया। दरबान उसे देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसने पूछा, "तुम भीतर कैसे पहुँचे?" नरेन ने उत्तर दिया, "अच्छा, तुम्हें मालूम नहीं कि मैं एक जादूगर हूँ?"

नरेन के एक दोस्त के अहाते में एक पेड़ था। नरेन और उसके मित्र उसपर चढ़ते और उसकी डाल पर झूलते थे। नरेन पाँवों के सहारे से उसकी डाल पर उल्टा झूलता था, और आगे-पीछे झूलते हुए

अन्ततः नीचे कूद पड़ता था। एक बूढ़ा व्यक्ति वहाँ रहा करता था। वह लड़कों का इस प्रकार झूलना पसन्द न करता था क्योंकि ऐसा करना खतरनाक भी हो सकता था। एक दिन उस बूढ़े ने नरेन और उसके मित्रों से कहा, "देखो, तुम जानते नहीं कि उस पेड़ पर एक भूत रहता है? वह ब्रह्म-दैत्य है। यदि तुम लोग उसको इस तरह परेशान करोगे, तो वह तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा। सावधान ! उस पेड़ पर फिर कभी मत चढ़ना।"

बच्चों को डराने के लिए इतना ही काफी था, परन्तु नरेन को नहीं। जैसे ही वह बूढ़ा वहाँ से चला गया नरेन पुनः उस पेड़ पर चढ़कर झूलने लगा। उसके दोस्तों ने पूछा, "नरेन! तुम कैसे यह करने का साहस कर रहे हो? तुमने सुना नहीं वह बूढ़ा अभी क्या कह गया?"

नरेन ने हँसकर उनसे कहा,"तुम लोग भी कैसे मूर्ख हो ! मैं कितनी बार इस पेड़ पर चढ़ा हूँ। यदि उस बूढ़े की बात सच होती तो मेरी गर्दन कब की टूट गयी होती।"

४
नरेन बड़ा हुआ

जैसे-जैसे नरेन बड़ा होने लगा वह खेलने के बजाय पुस्तकें पढ़ने में अधिक रुचि लेने लगा। पाठशाला में वह अच्छी तरह पढ़ाई करता था। परन्तु उसके पिताजी दो वर्षों के लिए उसे कोलकाता से बाहर ले गये जिससे उसका पाठशाला जाना छूट गया। जब वह लौट कर आया तो उसे तीन वर्ष का पाठ्यक्रम एक वर्ष में ही पूरा करना पड़ा।.जब परीक्षा का समय निकट आने लगा उसने अथक परिश्रम करना शुरू कर दिया और प्रवेशिका परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। उस वर्ष उसकी पाठशाला से वह

एकमात्र छात्र प्रथम श्रेणी में आया था। उसके पश्चात् एक वर्ष के लिए वह प्रेसिडेन्सी कॉलेज में पढ़ने के लिए दाखिल हुआ। उसके दूसरे वर्ष वह जनरल असेम्बली की संस्था में दाखिल हुआ, जिसे आजकल स्कॉटिश चर्च कॉलेज कहा जाता हैं। इस कॉलेज के अध्यापकगण नरेन की बुद्धिमत्ता देखकर चमत्कृत हो जाते थे। प्रधानाध्यापक श्री विलियम हेस्टी ने कहा था कि नरेन के समान प्रतिभाशाली छात्र उन्होंने आज तक नहीं देखा। नरेन बहुत पढ़ाई करता था तथा विभिन्न विषयों पर अनेकों पुस्तकें पढ़ा करता था। उसने १८८१ ई. में बी.ए. (प्रथम) की परीक्षा उत्तीर्ण कर १८८४ ई. में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की।

नरेन ने चार या पाँच वर्षों तक संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की थी। उसने अनेक प्रकार के वाद्य-यन्त्रों को बजाना भी सीख लिया था तथा एक उत्कृष्ट गायक के रूप में उसकी ख्याति भी हुई थी। इसी वजह से उसे अनेक बार सभाओं में गाने के लिए आमन्त्रित किया जाता। सभाओं में वह खूब हँसी-मजाक करता, परन्तु उसे बौद्धिक चर्चाओं में विशेष रस प्राप्त होता। अपने मित्रों एवं बुजुर्गों के साथ वह अक्सर गम्भीर विषयों पर चर्चा किया करता था। तर्क करने में उसे विशेष महारत हासिल थी और कुछ लोग ही उसके सामने टिक पाते थे।

इसी समय नरेन धर्म-विषयक समस्याओं में विशेष रुचि लेने लगा। अन्य नवयुवकों की भाँति नरेन भी ब्राह्मसमाज का सदस्य बन गया तथा श्री केशवचन्द्र सेन की वक्तृताओं को सुनने लगा। समाज में उसे अक्सर गाने के लिए आग्रह किया जाता। परन्तु एक प्रश्न उसे सदा कष्ट पहुँचाता कि ईश्वर का कोई अस्तित्व भी है या नहीं अथवा क्या किसी ने आज तक उसे देखा भी है। इस प्रश्न के उचित समाधान हेतु वह अनेक धार्मिक नेताओं के समक्ष गया जिसमें श्री देवेन्द्रनाथ टैगोर भी थे। परन्तु कोई भी उसकी शंकाओं का समाधान नहीं कर सका।

५

नरेन श्रीरामकृष्ण से मिले

धर्म में नरेन की रुचि थी, परन्तु हिन्दूधर्म की अनेक शिक्षाओं पर से उनका विश्वास उठ चुका था। अत: उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि किस धर्म पर विश्वास करें। वे बहुत-से धार्मिक नेताओं के पास गये, परन्तु किसी से भी उन्हें सहायता नहीं मिली। एक बार उन्होंने

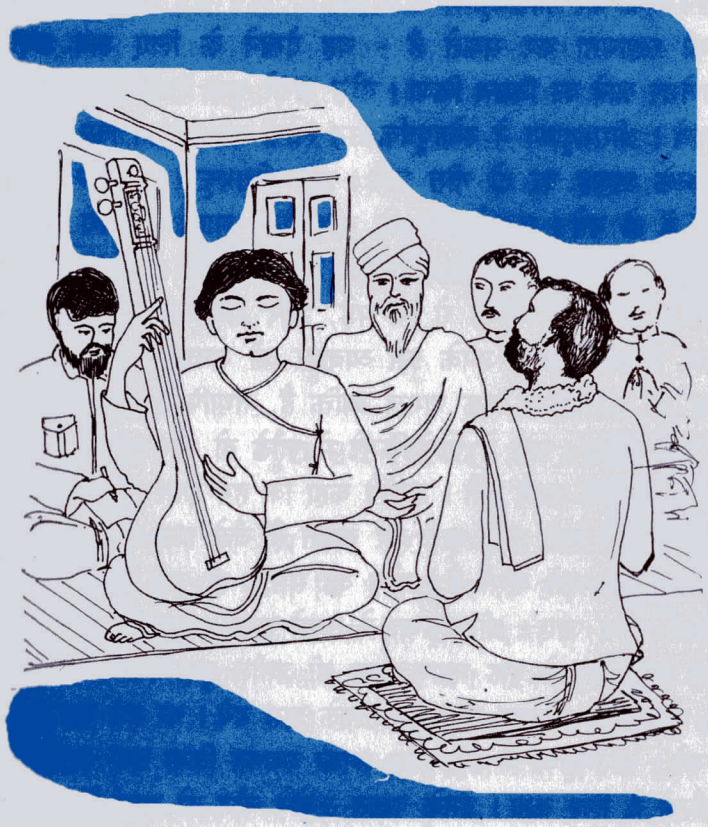

नरेन ने उनके आग्रह पर दो गीत गाये

श्रीरामकृष्ण से मिलने का निश्चय किया। श्रीरामकृष्ण एक महान् हिन्दू सन्त थे। वे हुगली जिले के कामारपुकुर ग्राम से आये थे। उस समय वे कोलकाता के निकट दक्षिणेश्वर के काली मन्दिर में निवास कर रहे थे। वे ध्यान, प्रार्थना एवं सदैव ईश्वर का चिन्तन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते थे। कई लोग उनके पास आकर अपनी आध्यात्मिक समस्याओं को सुलझाया करते।

नरेन ने अपने शिक्षक श्री हेस्टी और अपने एक रिश्तेदार से उनके सम्बन्ध में सुना था। कोलकाता में इन्हीं रिश्तेदार के घर पर उन्होंने एक बार श्रीरामकृष्ण के दर्शन भी किये थे। श्रीरामकृष्ण कैसे उनकी सहायता कर सकते हैं - यह देखने के लिए अब उन्होंने दक्षिणेश्वर जाने का निश्चय किया। नरेन अपने कुछ मित्रों को अपने संग ले गये। श्रीरामकृष्ण ने स्नेहपूर्वक उन लोगों का स्वागत किया। नरेन ने उनके आग्रह पर दो गीत गाये। तब श्रीरामकृष्ण उन्हें एक दूसरे कमरे में ले गये। उन्होंने नरेन के साथ ऐसी आत्मीयता-भरा व्यवहार किया मानो उनका कोई खोया हुआ मित्र बहुत दिनों के बाद लौट आया हो। आनन्द से वे रो भी पड़े, और अपने हाथों से नरेन को मिठाई खिलाई। नरेन उनके इस व्यवहार को समझ न सके। उन्होंने सोचा कि श्रीरामकृष्ण एक पागल व्यक्ति हैं, तथापि उन्होंने पुनः आने का वचन दिया। जब वे दोनों कमरे में लौटे तो श्रीरामकृष्ण ईश्वर के सम्बन्ध में बातें करने लगे। उन्होंने कहा कि हम ईश्वर को देख सकते हैं और उनसे उसी तरह बातें कर सकते हैं जैसे हम अपने मित्रों को देखते हैं एवं बातें करते हैं। नरेन को समझा ही नहीं कि उनके बारे में क्या सोचा जाए। श्रीरामकृष्ण ने उनसे एक अद्‌भुत ढंग से बर्ताव किया था परन्तु वे एक महान् सन्त भी प्रतीत हुए थे।

एक महीने के बाद नरेन पुनः उनके पास गये। पर इस बार अकेले ही गये। श्रीरामकृष्ण ने स्नेहपूर्वक उनका स्वागत किया तथा अपने पास ही बैठने के लिए कहा। उसके पश्चात् उन्होंने नरेन को स्पर्श किया। इस स्पर्श के कारण नरेन को एक अद्‌भुत अनुभव हुआ। दीवारें और कमरा

जोरों से घूमने लगे और कहीं शून्य में विलीन हो गये। नरेन को लगा कि उनकी मृत्यु हो जाएगी। वे डर गये और चिल्ला उठे, "आप मुझे यह क्या कर रहे हैं? घर में मेरे माता-पिता हैं।"

श्रीरामकृष्ण जोरों से हँसे और उनकी छाती को सहलाने लगे। उन्होंने कहा, 'ठीक है, अभी उसे यहीं रहने दो। समय आने पर सब कुछ होगा।'" इस स्पर्श से वह अद्‌भुत अनुभव खत्म हो गया तथा नरेन को सभी कुछ पूर्ववत् ही लगने लगा।

जब नरेन तीसरी बार श्रीरामकृष्ण से मिलने गये, तब भी उन्हें ऐसा ही अनुभव हुआ। श्रीरामकृष्ण के स्पर्श मात्र से नरेन पुनः बाह्य ज्ञान खो बैठे। वे समझ ही नहीं पाये कि क्या हो गया। उनका शरीर और मस्तिष्क दोनों बलवान थे, फिर भी ये महापुरुष केवल स्पर्श मात्र से ही उन्हें न जाने क्या कर देते थे। वे इसका कुछ भी रहस्य समझ नहीं पाते थे। फिर भी वे यह समझ गये थे कि श्रीरामकृष्ण कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। वे अब उनपर बहुत श्रद्धा करने लगे थे, यद्यपि उनके मन में अब भी बहुत-से प्रश्न अनुत्तरित रह गये थे।

६

गुरु एवं शिष्य

अवसर मिलने पर अब नरेन श्रीरामकृष्ण के पास अक्सर जाने लगे। उन्होंने अनुभव किया कि श्रीरामकृष्ण ही उन्हें सबसे अधिक स्नेह करते हैं। वे सदैव ही उनकी राह देखा करते हैं।

श्रीरामकृष्ण का पूरा विश्वास था कि एक दिन नरेन बहुत महान् आदमी बनेगा। वे इस बात को अन्य भक्तगणों के समक्ष भी कहा करते थे एवं नरेन के अनेक सद्‌गुणों का बखान किया करते थे। वे कहते कि यदि अन्य भक्तगण तारे हैं तो नरेन उनमें सूर्य के समान है। वे कहा करते कि नरेन एक मुक्त पुरुष है और उसका जन्म दूसरों की सहायता करने के

श्रीरामकृष्ण ने कहा, "यदि तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते तो यहाँ क्यों आया करते हो?"

लिए ही हुआ है। श्रीरामकृष्ण का नरेन पर पूर्ण विश्वास था। वे जानते थे कि नरेन कभी कोई गलत काम कर ही नहीं सकता।

नरेन भी श्रीरामकृष्ण से गहन प्रेम करते थे। यद्यपि वे पढ़ाई-लिखाई में व्यस्त रहते थे तो भी श्रीरामकृष्ण से मिलने दक्षिणेश्वर जाया करते थे। श्रीरामकृष्ण नरेन के गीतों को सुनकर मुग्ध हो जाते और समाधि में चले जाते थे। नरेन एक स्वतन्त्र-विचारक थे। वे किसी भी चीज़ को पूरी तरह परखे बिना उसपर यूँही विश्वास नहीं करते थे। यदि श्रीरामकृष्ण की किसी बात को वे तर्क-संगत नहीं पाते तो उनसे भी

तर्क कर बैठते थे। एक बार श्रीरामकृष्ण ने कहा, "यदि तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते तो यहाँ क्यों आया करते हो?"

नरेन ने उत्तर दिया, "मैं आपसे प्रेम करता हूँ इसलिए यहाँ आता हूँ। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपकी सभी बातों को बिना विचारे ही मान लूँ।" नाराज़ होने के बदले श्रीरामकृष्ण इस उत्तर को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए; उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नरेन इतना स्वतन्त्र विचारक है।

इस प्रकार समय बीतता गया। नरेन की भक्ति श्रीरामकृष्ण के प्रति बढ़ती ही गयी। जो विभिन्न शिक्षाएँ श्रीरामकृष्ण नरेन को देते, वे भी उनको आचरण में लाने लगे। श्रीरामकृष्ण ने उन्हें ध्यान करना सिखाया, और नरेन भी ध्यान तथा विभिन्न आध्यात्मिक साधनाओं में मग्न होने लगे।

परन्तु नरेन को बड़े बुरे समय का सामना करना पड़ा। १८८४ के प्रारम्भ में उनके पिता की मृत्यु हो गयी। नरेन ही सबसे बड़े पुत्र थे। अतः परिवार का दायित्व उनके ही कन्धों पर आ पड़ा। उनके पिता ने कुछ भी रुपये-पैसे बचा न रखे थे। नरेन को परिवार हेतु भोजन जुटाना भी कठिन हो गया। वे अक्सर बिना खाये ही रह जाते थे ताकि अन्य लोगों के लिए कुछ अधिक बच जाए। उन्होंने नौकरी की तलाश की, परन्तु सफलता हाथ न लगी। बाद में उन्होंने एक वकील के दफ़्तर में काम किया, पाठशाला में पढ़ाया तथा इसी तरह के अन्य काम भी किये। परन्तु ये सब स्थायी नौकरियाँ न थीं, इसलिए नरेन को अपने परिवार के भरण-पोषण करने में कठिनाई हो रही थी। इन सब कष्टों के बावजूद उनके पास रहने के लिए एक घर अवश्य था। परन्तु उसके बारे में भी कलह शुरू हो गया था। उनके कुछ सम्बन्धियों ने समय का लाभ उठाने की सोचकर घर के एक बड़े हिस्से पर अधिकार जमाने की चेष्टा की। अदालत में यह मामला कई दिनों तक चला। सौभाग्यवश नरेन के परिवार के पक्ष में अदालत का फैसला सुनाया गया।